प्रवचन प्रसाद

।। जय श्रीराम।।

समस्त सिद्धान्तों के दृष्टान्त, श्री हनुमानजी

स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती

हनुमानजी की स्तुति करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि 'जय हनुमान ज्ञान गुण सागर', हे हनुमानजी आप ज्ञान और गुणों के सागर हैं। साथ ही साथ पवनसुत का चरित्र एक भक्त के लिए भी आदर्श रूप है। नारदजी तो उन्हें अपने 'भक्ति सूत्र' ग्रन्थ में एक भक्ति के आचार्य के रूप में वर्णित करते हैं। जिसका विवेक और भक्ति जीवन के प्रत्येक कर्म करते समय विद्यमान रहे उसे कर्मयोगी कहते हैं, अतः हनुमानजी एक महान कर्मयोगी भी हैं। मारुतिनन्दन में शास्त्रोक्त समस्त सिद्धान्त जीवन्त रूप में दिखाई देते हैं। वे किसी भी साधना सम्बन्धी सिद्धान्त के लिए उपयुक्त दृष्टान्त हैं। वे समग्र व्यक्तित्व के धनी हैं।

श्रीमद्भगवद् गीता व्यक्तित्व के समग्र विकास की संहिता है। भगवान अर्जुन से कहते हैं कि 'मामनुस्मर युध्य च', अर्थात 'हे अर्जुन, अपने जीवन संग्राम में तुम हमारा स्मरण बनाए रखते हुए अपने पुरुषार्थ का निर्वहन करो'। यह वाक्य कर्मयोगियों के लिए सूत्र की तरह से है। जो भी इस वाक्य को समझ लेता है, वह निश्चित रूप से कर्मयोगी बन जाता है, और हनुमानजी उसके हृदय में आदर्श की तरह से स्थित हो जाते हैं। सतही दृष्टि से देखने पर इस वाक्य का उपदेश व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता है। यदि प्रभु को याद करते हैं तो अपने कर्म में समग्रता नहीं आ पाती है, और यदि कर्म में समग्रता लाते हैं तो भगवत् स्मरण बाधित हो जाता है, प्रभु की वृत्ति नहीं टिक पाती है। यह तो ठीक ही है कि मन में एक बार में एक ही वृत्ति रह सकती है। किन्तु यदि हनुमानजी के जीवन और उनकी लीलाओं को देखें तो यह असम्भव और अव्यावहारिक प्रतीत लगने वाली बात भी अत्यन्त व्यावहारिक और उचित दिखने लगती है। ईश्वर स्मरण ही पवनसुत के प्रत्येक कर्म में सुन्दर भाव, उत्साह और निर्भीकता आदि का हेतु बना रहता है। हनुमानजी जिस समय ब्रह्मास्त्र से बंध कर रावण के दरबार में आते हैं, तब रावण उनकी निर्भीकता देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है और पूछता है कि, 'हे वानर! तुम कौन हो, तुम्हारे पीछे किसका बल है, तुम क्या मुझे जानते नहीं हो, मुझे देखकर क्या तुम्हें लेशमात्र भी डर नही लग रहा है?' उसके उत्तर रूप हनुमानजी बताते हैं कि हमारा परिचय यह है कि, जिनके संकल्प मात्र से यह सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय होता है, तथा जिनके बल के लवलेश से तुमने तीनों लोक का राज्य प्राप्त किया है, हम उन प्रभु के सेवक हैं।' हनुमानजी की यह अस्मिता थी।

साधारणतः हमारे मन में एक वृत्ति दूसरी वृत्ति को हटा देती है। किन्तु समस्त वृत्तियों की गहराई में स्थित जो हमारी अस्मिता रूप वृत्ति होती है, वह इन समस्त वृत्तियों को आधार प्रदान करती है, वह वृत्ति कभी भी समाप्त नहीं होती है। आपने अपना जो भी परिचय रखा है वह परिचय किसी भी संसारिक चीजों के स्मरण से बाधित नहीं होता है। जब हम ईश्वर स्मरण अपनी अस्मिता से जोड़ लेते हैं, तब ही वह दुर्लभ समन्वय स्थापित हो जाता है जहां ईश्वर स्मरण कभी भी कर्म की समग्रता को प्रभावित नहीं करता है, बल्कि यह स्मरण प्रत्येक कर्म को और दिव्य बना देता है। जब तक ईश्वर स्मरण इतना गहरा नहीं होता है, तभी तक यह धर्म-संकट बना रहता है कि कर्म में मन लगाएं अथवा ईश्वर स्मरण में। हनुमानजी के अपने परिचय का हेतु कोई कुलादि संसारिक निमित्त नहीं है, किन्तु वे अपने आपको त्रिलोकस्वामी श्रीराम के सेवक के तरह से ही जानते हैं। प्रत्येक कार्य में प्रभु के सेवक होने की वजह से निरभिमानता बनी रहती है, प्रत्येक परिस्थिति को प्रभु प्रदत्त सेवा का अवसर देखते हैं, और अपना कर्म करने के उपरान्त प्राप्त कर्मफल को प्रभु के प्रसाद की तरह से देखते हैं, किसी कार्य का श्रेय अपने उपर नहीं लेते हैं। अतः वे सदैव उत्साह, धन्यता और निश्चिन्तता से युक्त रहते हुए महान से महान कार्य को सम्पन्न करते हैं।

जो भी विवेकी भक्त अपना इस प्रकार का परिचय रखता है वह ही प्रभु के हाथ में अच्छा निमित्त बनकर जी पाता है। उसके अन्तर्मन में प्रभु का सदैव अबाधित रूप से स्मरण बना रहता है। ऐसा ज्ञानी भक्त ही अव्यवहारिक प्रतीत होने वाले उपर्युक्त सूत्र को अपने जीवन का सबसे बड़ा आशीर्वाद बना लेता है।

इत्योम् शम्।

Visit Vedanta Mission at: www.vmission.org
Become a member of VM-UK eGroup
Get the Vedanta Sandesh, the free monthly eNewsletter of Vedanta and Sanatan Dharma